रिजका की खेती

रिजका बहु वर्षीय फलीदार चारे वाली फसल है। एक वार बुवाई करने पर 2–3 वर्ष चारा लिया जा सकता है। इसमें सूखा सहने की शक्ति होती है। बहु कटाई व अधिक उपज के साथ–साथ रिजका एक उच्च गुणवत्ता वाला स्वादिष्ट व पौष्टिक चारा है।

उपयुक्त किस्में – आन्नद–2, एल.एल.सी.–3, एल.एल.सी.–5, टाईप–9, टाइप–8, सिरसा–8 सिरसा–9 ।

खेत की तैयारी एवं भूमि उपचार – खेत को 2–3 बार हैरो व कल्टीवेटर से जोतकर पाटा लगायें। इस समय भूमि में 10–15 टन प्रति हैक्टेयर कम्पोस्ट खाद मिला दें। साथ ही भूमिगत कीड़ों से बचाव हेतु 25 किलो मिथाईल पैराथियॉन 2 प्रतिशत धूल प्रति हैक्टेयर भूमि में मिला दें। खेत तैयार होने के बाद पलेवा करें व ओट आने पर एक दो बार कल्टीवेटर से जुताई करके बोयें।

बीज उपचार – रिजका का बीज राईजोबियम कल्चर से उपचारित करना चाहिए एक हैक्टर के बीज को 600 ग्राम राईजोबियम कल्चर को 250 ग्राम गुड़ के घोल में मिलाकर उपचारित करके बोयें।

बुवाई – बुवाई 20–25 किलो बीज प्रति हैक्टेयर की दर से कतारों में 20–25 सेमी की दूरी पर करें। रिजका की बुवाई अक्टूबर के दूसरे पखवाड़े से दिसम्बर के प्रथम सप्ताह तक की जा सकती है। चारे की अधिक उपज प्राप्त करने के लिये अक्टूबर का द्वितीय पखवाड़ा अधिक उपयुक्त पाया गया है।

उर्वरक – बुवाई के समय प्रति हैक्टेयर की दर से 15 किलो नत्रजन, 100 किलो फास्फोरस 30 किलो पोटाश दें। प्रथम सिंचाई के बाद में

प्रत्येक कटाई के बाद 15 किलो प्रति हैक्टेयर की दर से नत्रजन उर्वरक छिटक कर दें।

सिंचाई – बीज के अंकुरण के बाद हल्की सिंचाई करे। बुवाई के बाद अगली दो सिंचाइयां 5–7 दिन बाद करें तथा बाद की सिंचाइयां फसल की आवश्यकतानुसार करते रहें। ध्यान रहे कि कटाई के बाद सिंचाई अवश्य देवें ताकि फसल की पुनर्वृद्धि अच्छी हो सके।

खरपतवार नियंत्रण – रिजका की फसल के साथ उगने वाले मुख्य खरपतवार बथुवा, मोथा, कृष्णनील, प्याजी, चटरी, मटरी इत्यादि है। इसके नियंत्रण के लिये पहली सिंचाई के 4–5 दिन बाद खुरपी द्वारा निराई गुड़ाई करें। जिस खेत में अमरबेल का प्रकोप हो उस खेत में रिजका न बोये बीज को बोने से पूर्व 2 प्रतिशत नमक के घोल में डुबोकर कचरा एवं थोथे बीज को अलग कर लेवें।

अमरबेल का ज्यादा प्रकोप होने पर पूरे रिजके को अमरबेल के गुच्छा सहित एक साथ काटकर इकट्ठा कर काम मे लेवे। ध्यान रखे कि अमरबेल के टुकड़े इधर उधर ना बिखरे। इसके बाद मे पैराक्वेट खरपतवारनाशी को एक मिली लीटर प्रति लीटर पानी मे घोलकर पूरे रिजके के खेत मे एकसार छिड़काव करें। और तीसरे दिन सिंचाई कर दें। ऐसा करने से रिजके में पुनः फुटान आ जायेगी तथा अमरबेल पूरी तरह खत्म हो जायेगी।

पैराक्वेट स्पर्श खरपतवारनाशी है इसके छिड़काव के सम्पर्क में आने वाले सारे हरे पोधे सूख जाते है। अतः छिड़काव के समय ध्यान रखें कि हवा के बहाव के साथ पास मे खड़ी फसल को पैराक्वेट से हानि नही पहुॅचे। छिड़काव को दोहरायें नहीं।

पौध संरक्षण :– रिजका के मृदु रोमिल आसिता रोग का प्रकोप

शरद ऋतु में अधिक नमी की अवस्था में होता है। पत्तियां खराब हो जाती है। इनकी रोकथाम के लिये 0.2 प्रतिशत मैन्कोजेब के घोल का छिड़काव 10–15 दिन के अन्तर पर दो तीन बार करें। छिड़काव की गई फसल को 20 दिन तक पशुओं को नहीं चरावें।

चारे की कटाई – समय पर बोयी गयी फसल की पहली कटाई बुवाई के 60 दिन बाद व दूसरी कटाई उसके 30–35 दिन बाद करें। फसल की अच्छी पुनर्वृद्धि हेतु फसल को भूमि से 4–5 सेमी ऊँचाई से काटें। रिजका की 7–8 कटाइयों से 700–800 क्विण्टल हरा चारा एवं 140–160 क्विण्टल सूखा चारा प्रति हैक्टर प्राप्त किया जा सकता है।

फॉस्फेटिक एवं
पोटाशिक उर्वरक
बुवाई के समय
ऊर कर देवें